UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र ,एवं अभिलेखशास्त्र सामान्य परिचय

UNIT=9

Daily = 6 pm

Class-47

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

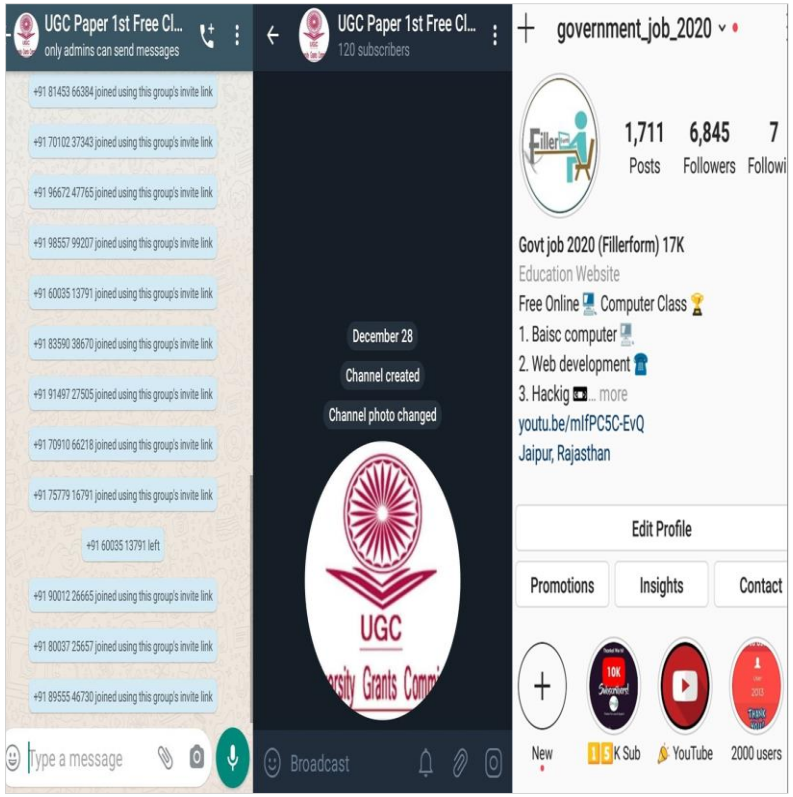
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
1K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

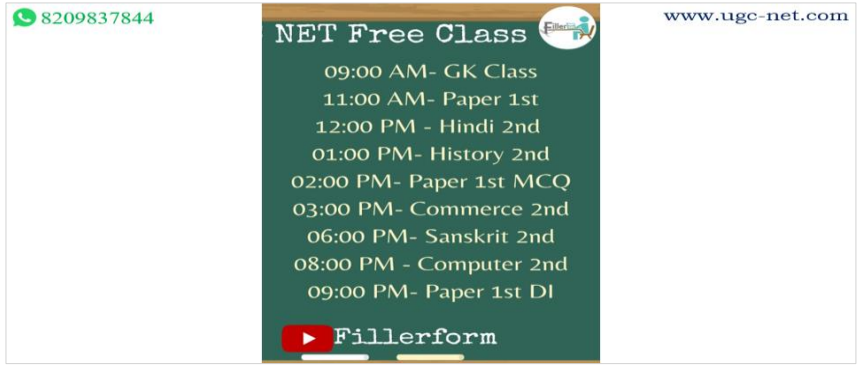
8209837844
NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform
www.ugc-net.com

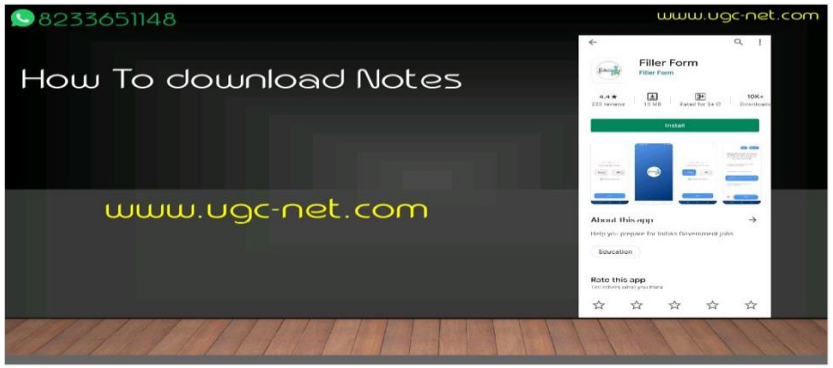
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

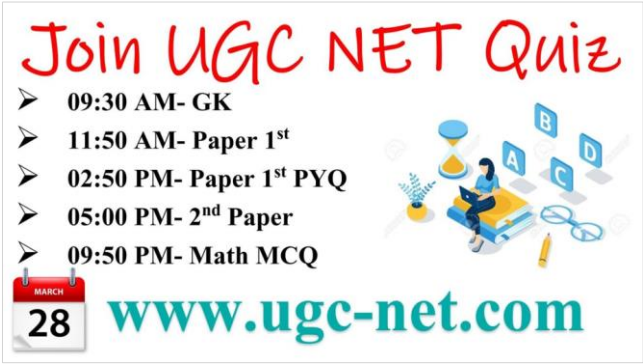
Join UGC NET Quiz
09:30 AM- GK
11:50 AM- Paper 1st
02:50 PM- Paper 1st PYQ
05:00 PM- 2nd Paper
09:50 PM- Math MCQ
MARCH
28
www.ugc-net.com

Join UGC NET Quiz
Join Free
MARCH
28
www.ugc-net.com

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

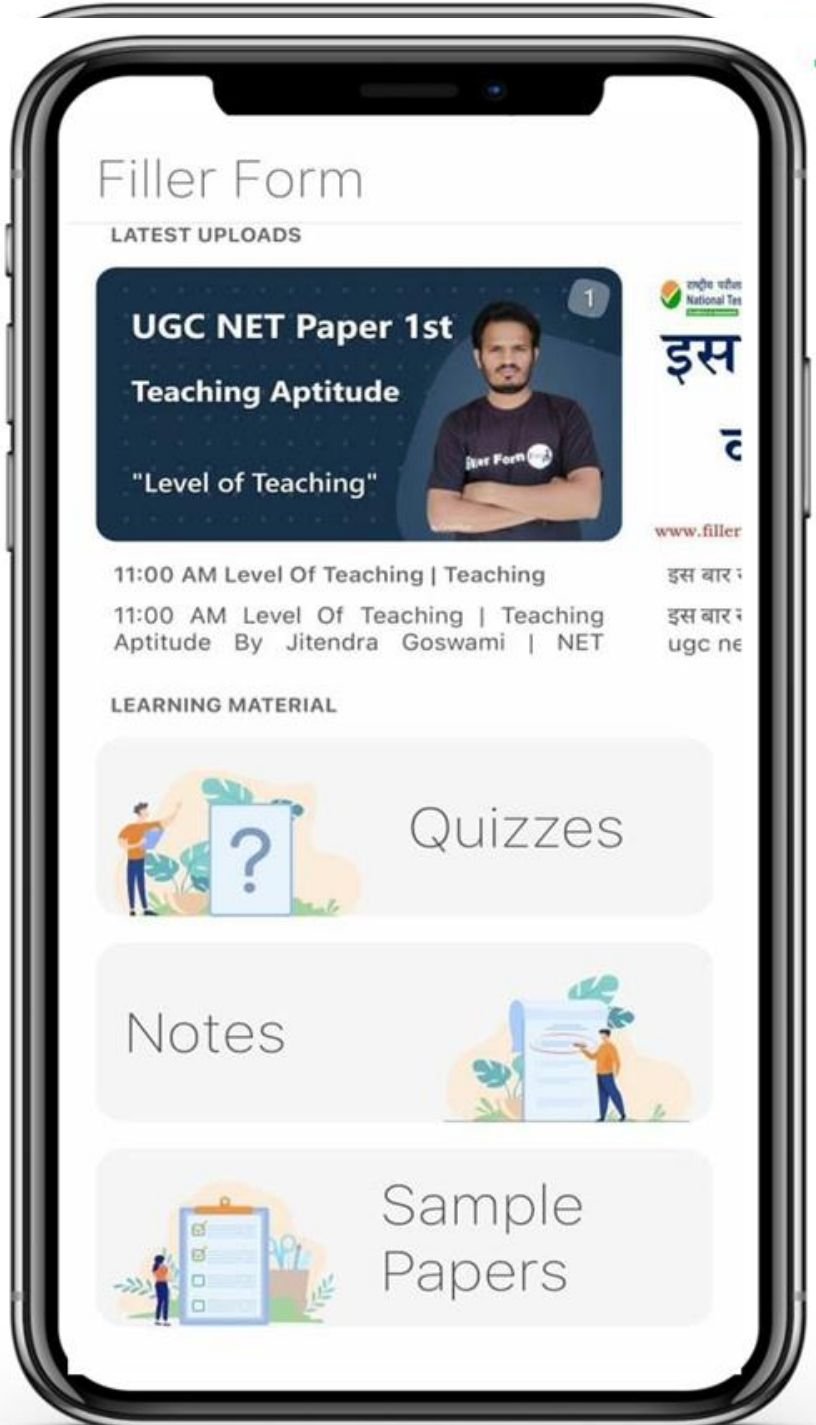

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

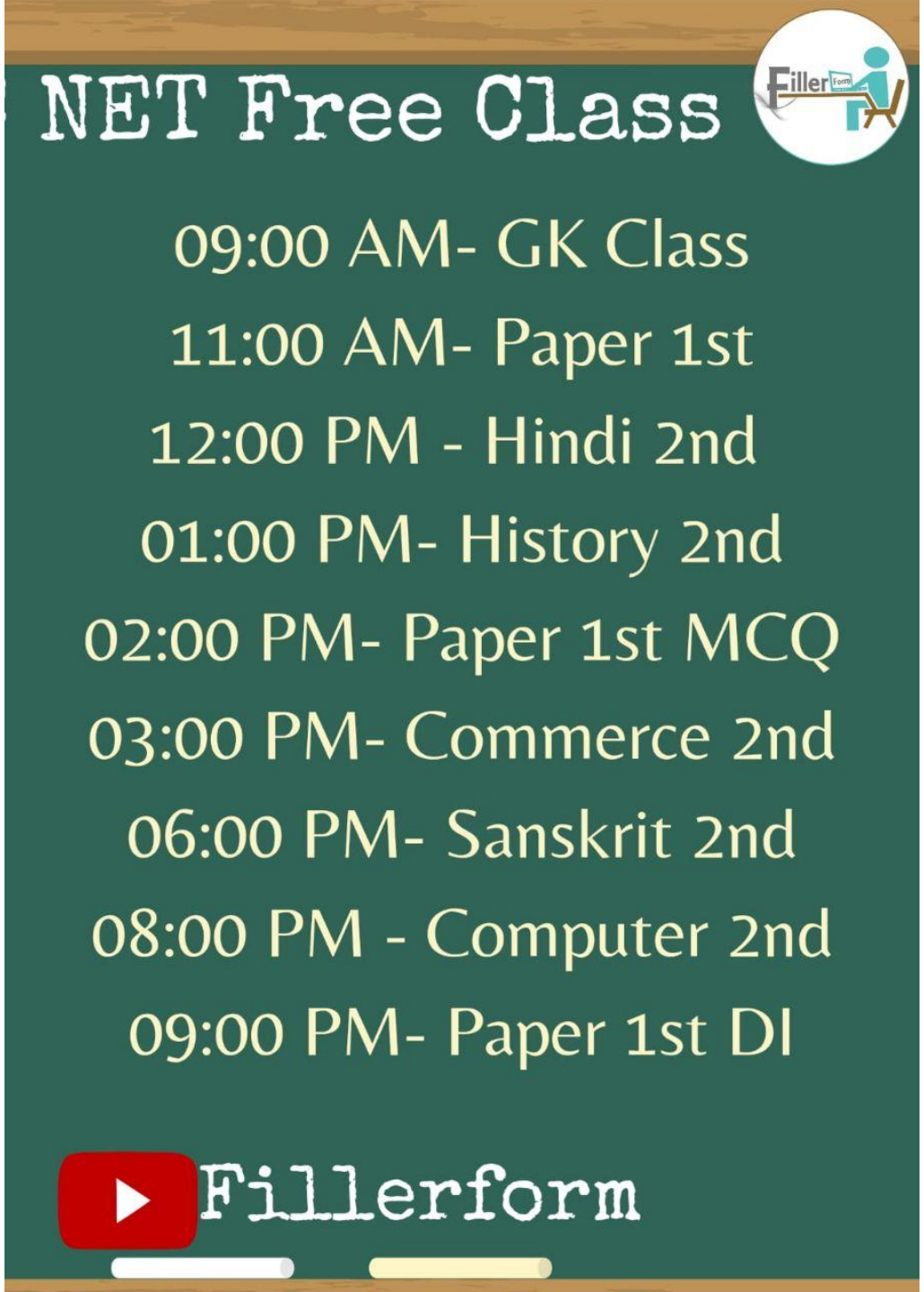

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

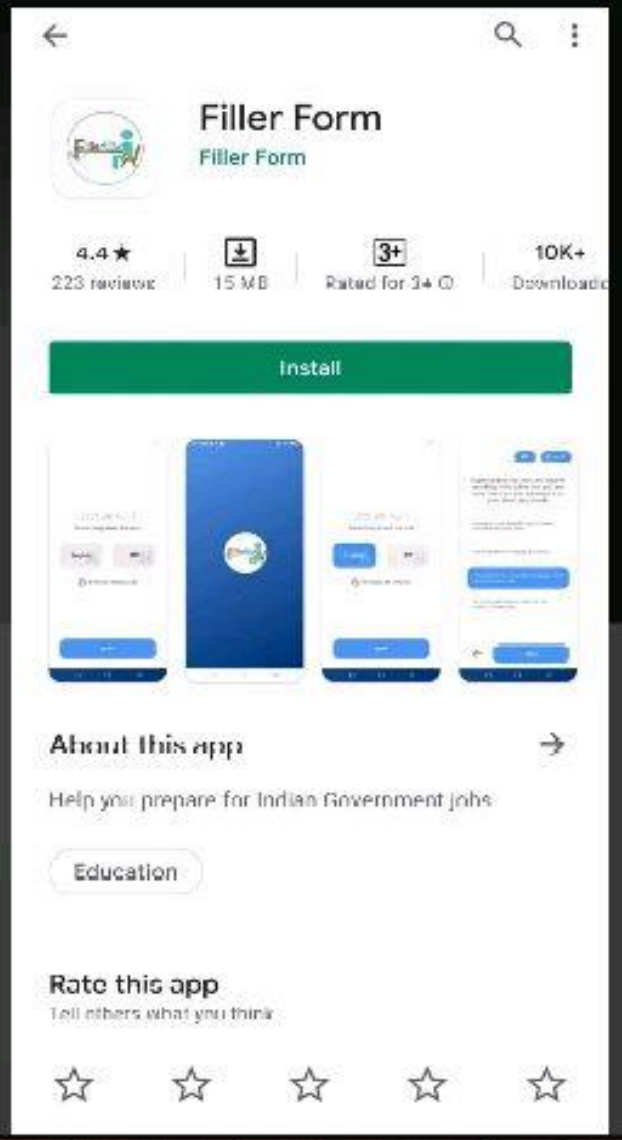

Join UGC NET Quiz

Join Free

www.ugc-net.com

Join UGC NET Quiz

- **09:30 AM- GK**
- **11:50 AM- Paper 1st**
- **02:50 PM- Paper 1st PYQ**
- **05:00 PM- 2nd Paper**
- **09:50 PM- Math MCQ**

www.ugc-net.com

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

Home work Answer.....

8. 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च.....पुराणं पञ्चलक्षणम्' अत्र 'प्रतिसर्गः' शब्दस्य किं अर्थः ?

(A) उत्पत्तिः
(B) स्थितिः
(C) प्रलयः
(D) देवभूमिः

9. पुराणपञ्चलक्षणे नास्ति -

(A) वंशः
(B) उत्सर्गः
(C) सर्गः
(D) प्रतिसर्गः

Today's Topic...

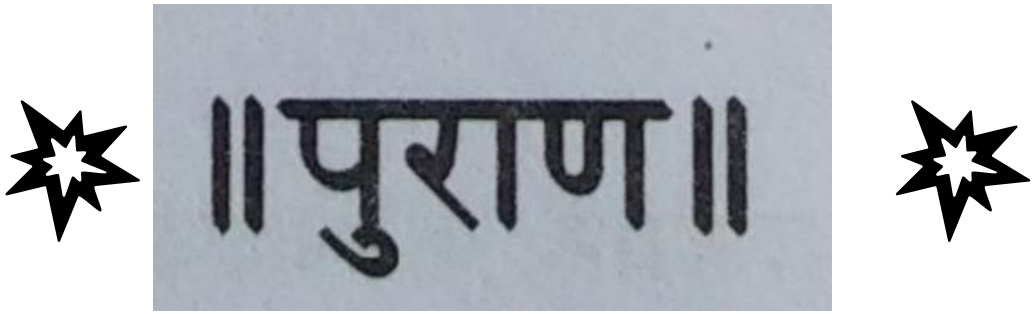

8209837844 www.ugc-net.com

प्रमुख पुराणों का परिचय-

पुराणों में सबसे पुराना 'विष्णुपुराण' ही प्रतीत होता है। उसमें सांप्रदायिक खींचतान और रागद्वेष नहीं है। पुराण के पाँचो लक्षण भी उसपर ठीक-ठीक घटते हैं। उसमें सृष्टि की उत्पत्ति और लय, मन्वंतरों, भरतादि खंडों और सूर्यादि लोकों, वेदों की शाखाओं तथा वेदव्यास द्वारा उनके विभाग, सूर्य वंश, चंद्र वंश आदि का वर्णन है। कलि के राजाओं में मगध के मौर्य राजाओं तथा गुप्तवंश के राजाओं तक का उल्लेख है। श्रीकृष्ण की लीलाओं का भी वर्णन है पर बिल्कुल उस रूप में नहीं जिस रूप में भागवत में है।

8209837844 www.ugc-net.com

वायुपुराण के चार पाद है, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, कल्पों ओर मन्वन्तरों, वैदिक ऋषियों की गाथाओं, दक्ष प्रजापति की कन्याओं से भिन्न भिन्न जीवोत्पति, सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजाओं की वंशावली तथा कलि के राजाओं का प्रायः विष्णुपुराण के अनुसार वर्णन है। मत्स्यपुराण में मन्वंतरों और राजवंशावलियों के अतिरिक्त वर्णाश्रम धर्म का बडे विस्तार के साथ वर्णन है और मत्स्यावतार की पूरी कथा है। इसमें मय आदि असुरों के संहार, मातृलोक, पितृलोक, मूर्ति और मंदिर बनाने की विधि का वर्णन विशेष ढंग का है।

8209837844

www.ugc-net.com

श्रीमद्भागवत का प्रचार सबसे अधिक है क्योंकि उसमें भक्ति के माहात्म्य और श्रीकृष्ण की लीलाओं का विस्तृत वर्णन है। नौ स्कंधों के भीतर तो जीवब्रह्म की एकता, भक्ति का महत्व, सृष्टिलीला, कपिलदेव का जन्म और अपनी माता के प्रति वैष्णव भावानुसार सांख्यशास्त्र का उपदेश, मन्वंतर और ऋषिवंशावली, अवतार जिसमें ऋषभदेव का भी प्रसंग है, ध्रुव, वेणु, पृथु, प्रह्लाद इत्यादि की कथा, समुद्रमंथन आदि अनेक विषय हैं। पर सबसे बड़ा दशम स्कंध है जिसमें कृष्ण की लीला का विस्तार से वर्णन है। इसी स्कंध के आधार पर शृंगार और भक्तिरस से पूर्ण कृष्णचरित् संबंधी संस्कृत और भाषा के अनेक ग्रंथ बने हैं। एकादश स्कंध में यादवों के नाश और बारहवें में कलियुग के राजाओं के राजत्व का वर्णन है। भागवत की लेखनशैली अन्य पुराणों से भिन्न है। इसकी भाषा पांडित्यपूर्ण और साहित्य संबंधी चमत्कारों से भरी हुई है, इससे इसकी रचना कुछ पीछे की मानी जाती है। अग्निपुराण एक विलक्षण पुराण है जिसमें राजवंशावलियों तथा संक्षिप्त कथाओं के अतिरिक्त धर्मशास्त्र, राजनीति, राजधर्म, प्रजाधर्म, आयुर्वेद, व्याकरण, रस, अलंकार,

8209837844 www.ugc-net.com

शस्त्र-विद्या आदि अनेक विषय हैं। इसमें 'तंत्रदीक्षा' का भी विस्तृत प्रकरण है। कलि के राजाओं की वंशावली विक्रम तक आई है, अवतार प्रसंग भी है। इसी प्रकार और पुराणों में भी कथाएँ हैं। विष्णुपुराण के अतिरिक्त और पुराण जो आजकल मिलते हैं उनके विषय में संदेह होता है कि वे असल पुराणों के न मिलने पर पीछे से न बनाए गए हों। कई एक पुराण तो मत-मतांतरों और संप्रदायों के राग-द्वेष से भरे हैं। कोई किसी देवता की प्रधानता स्थापित करता है, कोई किसी देवता की प्रधानता स्थापित करता है, कोई किसी की। ब्रह्मवैवर्त पुराण का जो परिचय मत्स्यपुराण में दिया गया है उसके अनुसार उसमें रथंतर कल्प और वराह अवतार की कथा होनी चाहिए पर जो ब्रह्मवैवर्त आजकल मिलता है उसमें यह कथा नहीं है। कृष्ण के वृंदावन के रास से जिन भक्तों की तृप्ति नहीं हुई थी उनके लिये गोलोक में सदा होनेवाले रास

8209837844 www.ugc-net.com

का उसमें वर्णन है। आजकल का यह ब्रह्मवैवर्त मुसलमानों के आने के कई सौ वर्ष पीछे का है क्योंकि इसमें 'जुलाहा' जाति की उत्पत्ति का भी उल्लेख है -- **म्लेच्छात् कुविंदकन्यायां जोला जातिर्बभूव ह**। (10, 121)। ब्रह्मपुराण में तीर्थों और उनके माहात्म्य का वर्णन बहुत अधिक हैं, अनन्त वासुदेव और पुरुषोत्तम (जगन्नाथ) माहात्म्य तथा और बहुत से ऐसे तीर्थों के माहात्म्य लिखे गए हैं जो प्राचीन नहीं कहे जा सकते। 'पुरुषोत्तमप्रासाद' से अवश्य जगन्नाथ जी के विशाल मंदिर की ओर ही इशारा है जिसे गांगेय वंश के राजा चोड़गंग (सन् 1077 ई0) ने बनवाया था। मत्स्यपुराण में दिए हुए लक्षण आजकल के पद्मपुराण में भी पूरे नहीं मिलते हैं। वैष्णव सांप्रदायिकों के द्वेष की इसमें बहुत सी बातें हैं। जैसे, पाखण्डिलक्षण, मायावादनिंदा, तामसशास्त्र, पुराणवर्णन

8209837844 www.ugc-net.com

इत्यादि। वैशेषिक, न्याय, सांख्य और चार्वाक 'तामस शास्त्र' कहे गए हैं और यह भी बताया गया है। इसी प्रकार मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कंद और अग्नि तामस पुराण कहे गए हैं। सारंश यह कि अधिकांश पुराणों का वर्तमान रूप हजार वर्ष के भीतर का है। सबके सब पुराण सांप्रदायिक है, इसमें भी कोई संदेह नहीं है। कई पुराण (जैसे, विष्णु.) बहुत कुछ अपने प्राचीन रूप में मिलते हैं पर उनमें भी सांप्रदायिकों ने बहुत सी बातें बढ़ा दी हैं।

8209837
gc-net.com

पुराणों का काल एवं रचयिता-

यद्यपि आजकल जो पुराण मिलते हैं उनमें से अधिकतर पीछे से बने हुए या प्रक्षिप्त विषयों से भरे हुए हैं तथापि पुराण बहुत प्राचीन काल से प्रचलित थे। बृहदारण्यक उपनिषद् और शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि गीली लकड़ी से जैसे धुआँ अलग अलग निकलता है वैसे ही महान भूत के निःश्वास से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वांगिरस, इतिहास, पुराणविद्या, उपनिषद, श्लोक, सूत्र, व्याख्यान और अनुव्याख्यान हुए। छान्दोग्य उपनिषद् में भी लिखा है कि इतिहास पुराण वेदों में पाँचवाँ वेद है। अत्यंत प्राचीन काल में वेदों के साथ पुराण भी प्रचलित थे जो यज्ञ आदि के अवसरों पर कहे जाते थे। कई बातें जो पुराण के लक्षणों में हैं, वेदों में भी हैं। जैसे, पहले असत् था और कुछ नहीं था यह सर्ग

8209837844 www.ugc-net.com

या सृष्टितत्व है; देवासुर संग्राम, उर्वशी पुरूरवा संवाद इतिहास है। महाभारत के आदि पर्व में (1/233) भी अनेक राजाओं के नाम और कुछ विषय गिनाकर कहा गया है कि इनके वृत्तांत विद्वान सत्कवियों द्वारा पुराण में कहे गए हैं। इससे कहा जा सकता है कि महाभारत के रचनाकाल में भी पुराण थे। मनुस्मृति में भी लिखा है कि पितृकार्यों में वेद, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण आदि सुनाने चाहिए।

8209837844 www.ugc-net.com

अब प्रश्न यह होता है कि पुराण हैं किसके बनाए। शिवपुराण के अंतर्गत रेवा माहात्म्य में लिखा है कि अठारहों पुराणों के वक्ता 'सत्यवतीसुत' 'व्यास' हैं। यही बात जन साधारण में प्रचलित है। पर मत्स्यपुराण में स्पष्ट लिखा है कि पहले पुराण एक ही था, उसी से 18 पुराण हुए (53.4)। ब्रह्मांड पुराण में लिखा है कि वेदव्यास ने एक 'पुराणसंहिता' का संकलन किया था। इसके आगे की बात का पता विष्णु पुराण से लगता है। उसमें लिखा है कि व्यास का एक '**लोमहर्षण**' नाम का शिष्य था जो सूति जाति का था। व्यास जी ने अपनी पुराण संहिता उसी के हाथ में दी। लोमहर्षण

8209837844 www.ugc-net.com

के छह शिष्य थे **सुमति, अग्निवर्चा, मित्रयु, शांशपायन,** अकृतव्रण और **सावर्णी**। इनमें से अकृतव्रण, सावर्णी और शांशपायन ने लोमहर्षण से पढ़ी हुई पुराणसंहिता के आधार पर और एक एक संहिता बनाई। वेदव्यास ने जिस प्रकार मंत्रों का संग्रहकर उन का संहिताओं में विभाग किया उसी प्रकार पुराण के नाम से चले आते हुए वृत्तों का संग्रह कर पुराणसंहिता का संकलन किया। उसी एक संहिता को लेकर सुत के शिष्यों के तीन और संहिताएँ बनाई। इन्हीं संहिताओं के आधार पर अठारह पुराण बने होंगे।

8209837844

www.ugc-net.com

पौराणिक सृष्टि विज्ञान-

पौराणिक सृष्टि विज्ञान तथा सांख्य सृष्टि सिद्धान्त दोनों एक दूसरे से सम्बंधित जरूर है, मगर आश्रित नहीं है। विभिन्न पुराणों में "नवविधि(नवधा)" सृष्टि का वर्णन प्राप्त होता है-

(क) पद्म पुराण

इसके 'सृष्टिखंड' में तृतीय अध्याय तथा 76 से 81 अध्याय तक सृष्टि रचना की नवधा प्रक्रिया वर्णित है।

जो इस प्रकार है-

1. प्राकृत सर्ग- यह 3 है।
2. वैकृत सर्ग- यह 5 है।
3. प्राकृत-वैकृत सर्ग- यह एक है।

इस प्रकार 3+5+1 कुल 9 सर्ग हुए जिन पे पूरी सृष्टि प्रक्रिया आधारित है ।

1. ब्रह्मोत्पत्ति
2. पंचतन्मात्राओं की उत्पत्ति
3. इन्द्रियादि इसको "वैकारिकी" भी कहा जाता है।
4. प्रकृति,बुद्धि यह मुख्य सृष्टि कही जाती है।

8209837844
www.ugc-net.com

5. तिर्यग-योनि
6. देवता
7. मनुषी
8. श्रुति(वेद मन्त्र) इसको अनुग्रह कहा जाता है।
9. सनक-सनंदन,सनातन,सनत्कुमार इसको उभयात्मक/कौमार कहा जाता है।

(ख) विष्णुपुराण

इसमें भी अग्नि तथा पद्म पुराण की प्रक्रिया को माना गया है। इसमें द्वितीय सर्ग को "भूत सर्ग" कहा गया है। इसमें निम्नानुसार सृष्टि प्रक्रिया वर्णित है-

1. संक्षिप्त सृष्टि वर्णन (द्वितीय अध्याय)
2. शक्ति, ब्रह्मा की आयु व काल विभाग (तृतीय अध्याय)
3. वाराह अवतार (चतुर्थ अध्याय)
4. सृष्टि विस्तार और अविद्या की सृष्टि (पंचम अध्याय)

82098 ...net.com

(ग) श्रीमद् भागवत महापुराण

'भागवत' के **"तृतीय स्कंध"** के दशम अध्याय में सृष्टि प्रक्रिया वर्णित है। इसमें प्राकृत-वैकृत सर्ग को नहीं माना गया है परंतु "नवधा सृष्टि प्रक्रिया" का सिद्धान्त स्वीकार किया गया है ।

जो इस प्रकार है-

1. प्राकृत सर्ग-

महत्तत्व, अहंकार, भूतानि(तन्मात्राणि), इन्द्रियादि, देव, तम

2. वैकृत सर्ग

वृक्ष, तिर्यक, मनुष्य

इस प्रकार 6+3=9

8209837844

w.ugc-net.com

(घ) मनुस्मृति

मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में लोक व प्राण सृष्टि का वर्णन है। विषयप्रतिपादन के लिये सृष्टि प्रक्रिया को सुविधानुसार चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है ।

1.आदिसृष्टि

दक्ष से पूर्व- पूर्ववर्तिनी (मानसी)

दक्ष के अनन्तर- मैथुनी

2. लोक/भूत सृष्टि

सूर्य,चंद्र,पृथ्वी,वायु व आकाश इन पञ्चमण्डलों की सृष्टि।

3. प्राणि सृष्टि

असुर,सुर, पित्तर, मनुष्यादियों की सृष्टि

4. आध्यात्म/अनुग्रह सृष्टि

श्रुति,उपनिषद तथा शास्त्रों की सृष्टि।

8209837844

www.ugc-net.com

पौराणिक आख्यान-

पुराणोक्त आख्यान पुराण वाङ्मय का विस्तार एवं उसके अन्तर्गत आये हुए विषयों के प्रकार,संक्षिप्त परिचय के लिए भी एक प्रदीर्घ विषय होता है । परंपरानुसार पुराणों का जो क्रम माना जाता है तद्नुसार यहाँ संकेत दिया गया है। यहाँ अध्याय संख्या का निर्देश किया गया है।

1. **ब्रह्मपुराण**- कुल अध्याय 245

(1) पार्वती उपाख्यान (अध्याय 30-50)

(2) श्रीकृष्ण चरित्र(अध्याय 180-212)

2. **पद्मपुराण**- कुल अध्याय -641

(1) समुद्र मंथन, (2) वृत्रासुरसंग्राम, (3)वामनावतार, (4) मार्कण्डेय एवं कार्तिकेय की उत्पत्ति, (5) रामचरित्र, (6) तारकासुरवध, (7) स्कन्द विवाह, (8) विष्णु चरित्र (सृष्टिखण्ड पंचमपर्व), (9) सोमशर्मा की कथा, (10) सकुला की कथा, (11) च्यवन का आख्यान (भूमिखण्ड), (12) शकुन्तलोपाख्यान, (13) उर्वशी- पुरुरवा उपाख्यान, (स्वर्गखण्ड), (14) रामायण कथा, (15) शृंगी ऋषि की कथा, (16) उत्तर रामचरित्र की कथा, (17) भागवत महिमाख्यान (पातालखण्ड), (18) रामकथा, (19) कृष्णकथा,

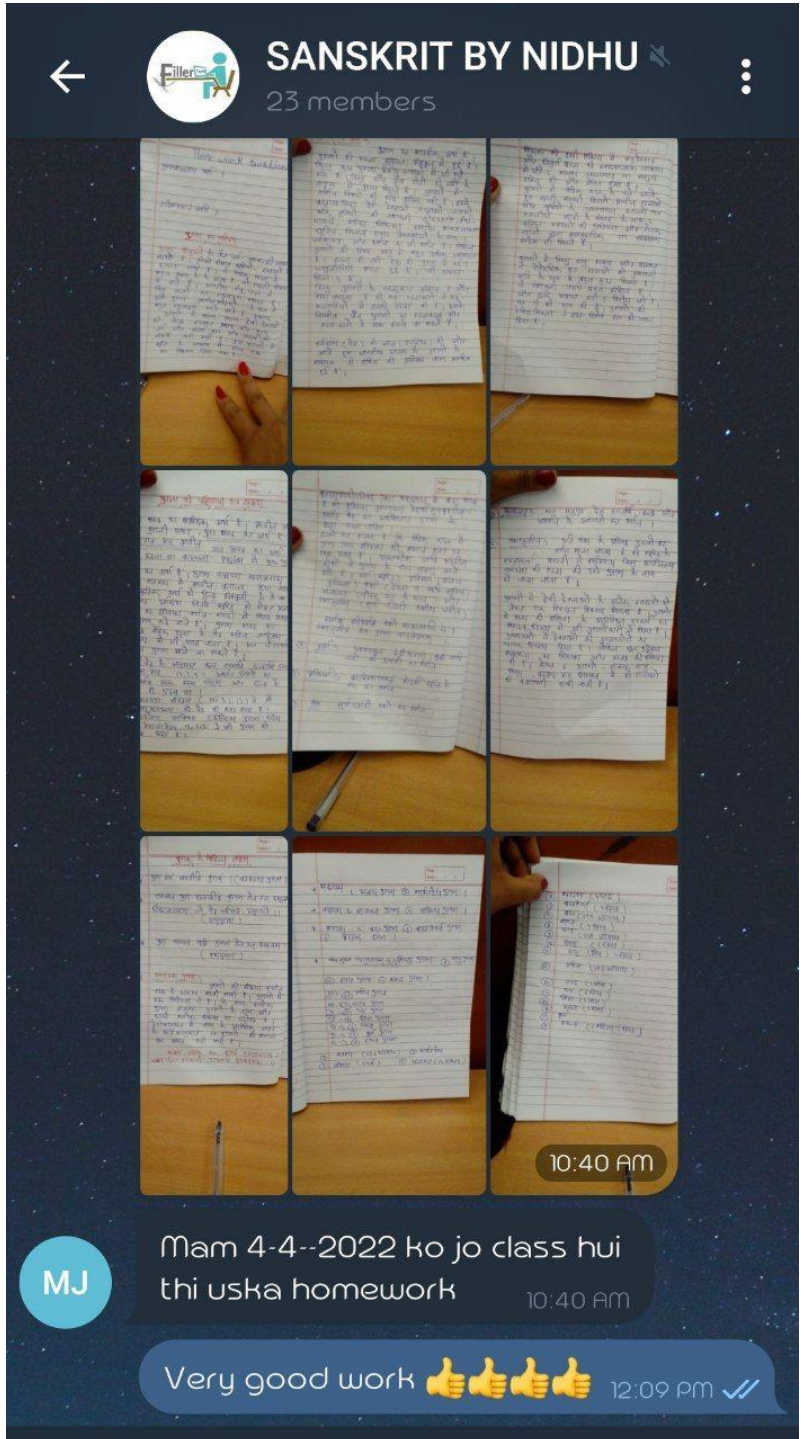
SANSKRIT BY NIDHU
23 members
10:40 AM
MJ
Mam 4-4--2022 ko jo class hui thi uska homework
10:40 AM
Very good work 👍👍👍👍
12:09 PM

MJ
Maya Jatwa
last seen recently

Next class....

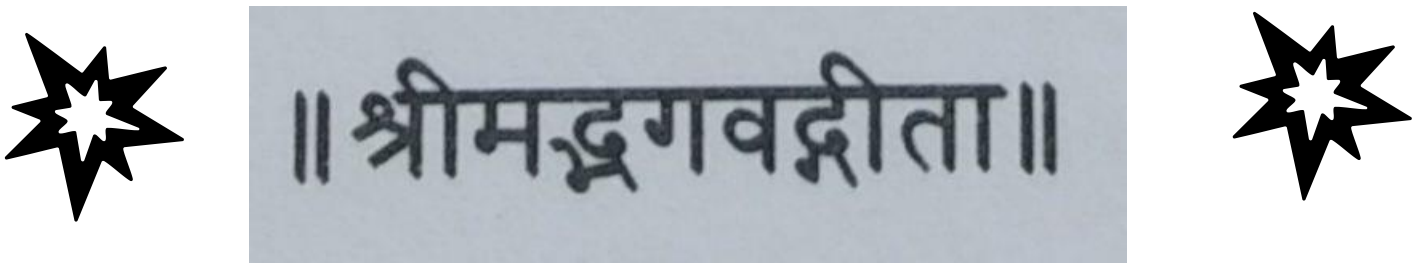

Home work Question....

14. खिलभागत्वेनाभिधीयते -

(A) नारदपुराणम्
(B) ब्रह्मपुराणम्
(C) कूर्मपुराणम्
(D) हरिवंशपुराणम्

15. उपपुराणम् अस्ति -

(A) भागवत
(B) मत्स्य
(C) अग्नि
(D) औशनस्

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU